National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multinationaljournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 13-06-2026, Accepted: 13-07-2026, Published: 28-07-2026
Volume 11, Issue 3, 2026, Page No. 40-42

पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षण विधियों तथा स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन तथा वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता

दीपक कुमार सिंह[1], डॉ. रूपाली[2]
[1] शोधकर्ता, (शिक्षाशास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देशिका, (शिक्षाशास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहाए उत्तर प्रदेश, भारत

सरांश
महामना जी प्राचीन भारत में प्रचलित शिक्षा प्रणाली के आदर्शों को श्रेष्ठ मानते थे। आज विश्व दिन पर दिन नवीन खोज कर रहा है। नयी–नयी शिक्षण विधियों का प्रचलन बढ़ रहा है। प्राचीन समय में गुरूओं द्वारा व्याख्यान, प्रवचन, भाषण, शब्दार्थ, व्युत्पत्ति, व्याकरण अनुवाद आदि प्राविधियों द्वारा छात्रों को उपदेश देते थे। पहले छात्रों को वेद मंत्र, प्रार्थना सम्बन्धी श्लोक कंठस्थ करा दिये जाते थे। जिससे विद्यार्थियों का आध्यात्मिक तथा बौद्धिक विकास होता था।
महामना जी ने प्राचीन संस्कृति से प्रभावित होकर स्त्री–शिक्षा पर बल दिया, क्योंकि प्राचीन काल में स्त्रियों को भी शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। वे स्त्रियों को इस प्रकार की शिक्षा देने के पक्ष में थे। जो धार्मिक होने के साथ–साथ भावात्मक हो तथा जिससे उनमें स्वाभिमान और श्रद्धा का भाव जागे।

मूल शब्दः पं0 मदन मोहन मालवीय, शिक्षण विधियाँ तथा स्त्री शिक्षा

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव व्यक्तित्व का विकास होता है। यह सर्वविदित है कि सफलता पूर्णतया शिक्षा के द्वारा ही सम्भव होती है। भारत की भूमि विभिन्नताओं वाली भूमि है इस पर अनेक प्रकार की जातियाँ, भाषा, रंग–रूप, वेश–भूषा और संस्कृति विद्यमान है किन्तु अनेक विभिन्नताओं के होते हुये भी भारत में अनेकता में एकता है, इस एकता के पीछे जिस वस्तु का सहयोग है वह है शिक्षा। जो कुछ भी साधन या व्यवहार मानव के ज्ञान का विकास करे, भावनाओं व इच्छाओं का परिष्कार करे, तर्क–चिन्तन का विकास करे, वही औपचारिक व अनौपचारिक रूप से शिक्षा है। शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य मानव व्यवहार का परिमार्जन करना है तथा इसके साथ ही संस्कृति का हस्तान्तरण करना भी है। क्योंकि शिक्षा के माध्यम से संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती है।
मालवीय जी शिक्षा के माध्यम से ऐसे "व्यक्ति" के निर्माण के पक्षपाती थे, जो चरित्रवान होने के साथ–साथ आर्थिक, प्राविधिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हो। वह अपनी जीविका प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता हो। उसे जीविका प्राप्त करने के लिये दर–दर की ठोकरें न खानी पड़े। मालवीय जी की मान्यता है कि यदि शिक्षा द्वारा इस प्रकार के व्यक्ति का निर्माण नहीं होता तो वह शिक्षा निरर्थक और निर्जीव है।
मालवीय जी शिक्षा व्यवस्था के व्यावहारिक तथा जीविकोपार्जन पर आधुनिक शिक्षा के पक्षधर थे। शिक्षा के आमूल चूल परिवर्तन सम्बन्धी उनके अनेक विचार युग की मांग के अनुसार प्रगतिशील एवं आधुनिक हैं।
महामना मालवीय का नाम भारत के राष्ट्र निर्माताओं में बहुत ऊँचा है। यदि गाँधी के साथ किसी का नाम लिया जा सकता है तो वह है पं0 मदन मोहन मालवीय का बहुत से लोगों ने उन्हें ''महर्षि'' की उपाधि से विभूषित किया था। कुछ लोगों ने उनके पुण्य दर्शनों की लालसा अभिव्यक्त की। डॉ0 हरिशंकर शर्मा ने उनकी स्तुति में इस प्रकार अपना उद्‌गार व्यक्त किया– ''पं0 महामना मदन मोहन मालवीय भारत की भव्य विभूतियों में से थे जिनकी धवल कीर्ति कौमुदी के पुण्य प्रकाश से पराधीनता पाश में पड़े हुये चिन्तन हीन स्वदेश ने अपना गौरव पहचान कर उन्नत शैल शिखर पर पहुँचाने की प्रेरणा पाई।''

अतः यह आवश्यक है कि हम वर्तमान समय में मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षण विधियों तथा स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन करें। जिसमें उनके योगदान एवं उनकी उपलब्धियों से वर्तमान शिक्षा में लाभ उठाया जा सकें।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

मालवीय जी के शिक्षण विधियों तथा स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचार वर्तमान काल में शिक्षा जगत में एक नवीन प्रकाश की किरणे बिखेर सकते हैं क्योंकि वर्तमान शिक्षा जगत को जिन लक्ष्यों और आदर्शों की अधिक आवश्यकता है। वे महामना जी के शिक्षण विधियों तथा स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों में निहित हैं। इस कारण से शोधकर्ता ने "पंडित मदन मोहन मालवीयः शिक्षण विधियों तथा स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन तथा वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता" नामक विषय शोध अध्ययन हेतु चुना है। अतः शोधकर्ता ने अपने शोध के माध्यम से मालवीय जी के द्वारा दिये गये विचारों को जानने का प्रयास किया, ताकि अध्ययन कर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनकी महत्ता देखकर इनको अपनाया जा सके।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

सम्बन्धित साहित्य का अर्थ

सम्बन्धित साहित्य का अर्थ अनुसंधान की उन सभी प्रकार की पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित शोध प्रबन्ध, ज्ञान कोषो एवं अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन के माध्यम से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा को तैयार करके कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।
राय, एम॰ (1986) ने अपने शोधग्रंथ "पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन" में उनके शिक्षा के उद्देश्यों, महत्व और प्रकृति का अध्ययन किया और पाया कि पंडित जी के अनुसार विद्यार्थी का जीवन सादा होना चाहिए, विनम्रता विद्यार्थी के लिए आभूषण की तरह है तथा विद्यार्थियों में स्वअनुशासन की भावना विकसित की जानी चाहिये।
बाखे (1983) बाखे एम0 एस0 के शोध प्रबन्ध ''लोक मान्य तिलक और स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन''

में लोकमान्य तिलक और स्वामी विवेकानन्द के कार्यो और गतिविधियों के आधार पर राष्ट्रीय सन्दर्भ में उनके शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है। तिलक और स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को अपने आप को पहचानने में समर्थ बनाना है। बालक अपने आप में एक वास्तविकता है। शिक्षा का कार्य व्यक्ति में वह सब योग्यतायें विकसित करता है और जीवन का गहन अर्थ निकलता है। शिक्षा पूर्ण वृद्धि के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण अवसर है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मालवीय जी के अनुसार शिक्षा विधियों का अध्ययन करना।
2. स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में मालवीय जी के विचारों का अध्ययन करना।

अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तित्व

पंडित मदन मोहन मालवीय जी

हमारे देश में समय–समय पर अनेकों महापुरुषों ने इस भूमि पर जन्म लिया है। उन्हीं में महामना जी का नाम भी सूर्य की भांति चमकता है। मदन मोहन मालवीय जी बीसवीं शताब्दी के एक महान दार्शनिक समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ, धार्मिक सुधारक के साथ–साथ महान शिक्षाशास्त्री भी थे।

महामना जी का शिक्षा दर्शन तत्व मीमांसीय एवं ज्ञान मीमांसीय दोनों ही दृष्टिकोण पर आधारित था। उन्होंने नैतिक जगत के साथ यथार्थ सत्ता, ब्रहम के ज्ञान को भी अपनी शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। महामना जी ने संसार के भौतिक एवं वैज्ञानिक विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है।

शोध सीमांकन

प्रस्तुत शोध में पंडित मदन मोहन मालवीय की शिक्षण विधियों तथा स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासांगिकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया। यह शोध अध्ययन मालवीय जी द्वारा प्रस्तुत, शिक्षण विधियों तथा स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों के सम्बन्ध तक ही सीमित रहा।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

वर्तमान अध्ययन मालवीय जी के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनकी शिक्षण विधियों तथा स्त्री शिक्षा सम्बन्धित विचारों को प्रस्तुत करने हेतु नियोजित किया गया। शोध अध्ययन में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि को अपनाया गया।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में मालवीय जी द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों का तथा मालवीय जी के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया।

पं0 मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षण विधियों तथा स्त्री षिक्षा सम्बन्धी विचार, निष्कर्ष एवं प्रासांगिकता

शिक्षण–विधियाँ सम्बन्धी विचार

महामना जी प्राचीन भारत में प्रचलित शिक्षा प्रणाली के आदर्शों को श्रेष्ठ मानते थे। आज विश्व दिन पर दिन नवीन खोज कर रहा है। नयी–नयी शिक्षण विधियों का प्रचलन बढ़ रहा है। प्राचीन समय में गुरूओं द्वारा व्याख्यान, प्रवचन, भाषण, शब्दार्थ, व्युत्पत्ति, व्याकरण अनुवाद आदि प्राविधियों द्वारा छात्रों को उपदेश देते थे। पहले छात्रों को वेद मंत्र, प्रार्थना सम्बन्धी श्लोक कंठस्थ करा दिये जाते थे। जिससे विद्यार्थियों का आध्यात्मिक तथा बौद्धिक विकास होता था।

महामना जी ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रचलित विशिष्ट शिक्षण–विधियों के समान विशिष्ट शिक्षण विधि को जन्म नहीं दिया किन्तु उन्होंने अपनी शिक्षा प्रदान करने के लिये कुछ निश्चित कार्य विधि बनायी। यह सव्रसम्मत है कि उन्होंने कई सैद्धान्तिक मूर्त शिक्षण– प्रणाली का सहारा लिये बिना ही भारतीय स्तर पर उपयोगी शिक्षण–विधि को स्वीकारां इन्होंने इसके लिए अनेक सिद्धान्तों एंव शिक्षण सूत्रों को आधार बनाया। वे शिक्षण–पद्धति को आत्मप्रेरित क्रिया के रूप के स्वीकारते थे। महामना जी ने विभिन्न शिक्षण–विधियों को शिक्षण कार्य के लिए उपयुक्त बताया है। जो इस प्रकार है–

अनुभव द्वारा सीखना

महामना जी ने अनुभव द्वारा सीखने के सिद्धान्तों पर बल दिया। उनके अनुसार बालक को स्वंय अनुभव द्वारा प्राप्त करता है, वह अधिक स्थायी एंव उपयोगी होता है। यह ज्ञान बालक के सम्पूर्ण जीवन में स्थानान्तरित होता है और भविष्य में जरूरत होने पर इस ज्ञान रूपी प्रकाश का उपयोग करता है।

क्रिया द्वारा सीखना

शिक्षण–पद्धति में क्रिया द्वारा सीखने की क्रिया को महामना जी ने विशेष महत्व दिया है। महामना जी का मत था कि बालक करके सीखने में अधिक प्रसन्नता का अनुभव करता है और जो कुछ सीखता है, वह अधिक देन तक स्थायी होता है।

समन्वय विधि के प्रयोग द्वारा सीखना

महामना जी ने सीखने की क्रिया में विभिन्न विषयों में समन्वय स्थापित करने पर विशेष बल दिया था। उनका मत था कि बच्चों को उन विषयों को सीखने से आनन्द व प्रसन्नता होती है जो कि उसके अनुभवों से सम्बन्ध रखते हैं। अनेक विषयों को अलग–अलग करके नहीं सीखा जा सकता हैं इसलिए अनेकों विषयों को समन्वय विधि द्वारा सीखना, नवीन शिक्षण–विधि द्वारा सीखना, नवीन शिक्षण–विधि का एक महत्वपूर्ण अंग है। सभी विषयों के एक ही उद्देश्य है इसलिये इन विभिन्न विषयों में समन्वय होना अत्यन्त आवश्यक है।

शारीरिक अंगो के प्रयोग द्वारा सीखना

महामना जी ने अपनी शिक्षण–पद्धति में शारीरिक अंगो के प्रयोग द्वारा सीखने पर भी विशेष बल दिया हे। चूँकि महामना जी का विचार था कि, मस्तिष्क का विकास शरीर के अनेक अंगो जैसे– हाथ, पैर, नाक, कान आदि अभ्यास एंव प्रशिक्षण से ही सम्भव है। इसलिए महामना जी ने कहा है कि बालक को सभी कार्य अपने शरीर के द्वारा सावधानी पूर्वक करने चाहिए।

स्वाध्याय एंव व्याख्यान विधि

महामना जी ने अपनी शिक्षण–विधि में स्वाध्याय एंव व्याख्यान विधि के प्रति प्रोत्साहनवादी दृष्टिकोण रखते थे। उनका मत था कि इस विधि के द्वारा कम समय में छात्रों को अधिक से अधिक ज्ञान प्रदान किया जा सकता है।

भाषा शिक्षण विधि

भाषा मानव जाति के लिए एक अनमोल उपहार है। इसलिए यह अन्य प्राणी से अलग स्थान प्राप्त किये हुए है। महामना जी भाषा शिक्षण में अध्ययन विधि को स्वीकार कर अन्य भाषाओं के साथ ही मातृभाषा शिक्षण की उपयोगिता को भी स्वीकार करते थे।

स्त्री–शिक्षा सम्बन्धी विचार

महामना जी ने प्राचीन संस्कृति से प्रभावित होकर स्त्री–शिक्षा पर बल दिया, क्योंकि प्राचीन काल में स्त्रियों को भी शिक्षा का

अधिकार प्राप्त था। महामना जी एक महान शिक्षाशास्त्री थे। उन्होंने अनेक धार्मिक वेद, उपनिषद व वैदिक साहित्य के ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया था। मालवीय जी ने बालक और बालिकाओं दोनों के लिये समान शिक्षा पर बल दिया। स्त्रितयों की दशा प्राचीन काल में जितनी श्रेष्ठ व उच्च थी। उतनी ही धीरे–धीरे दयनीय स्थिति में आ गयी। वर्तमान परिस्थितियों में स्त्रियों की दशा इतनी अधिक सोचनीय हो गयी कि, महामना जी ने स्त्रियों को शिक्षित कराने का बीड़ा उठाया।

भारत की अवनति व पतन का प्रमुख कारण महामना जी स्त्रियों की अशिक्षा को मानते थे। महामना जी के समान ही स्वामी विवेकानन्द ने भी यह आवाज उठाई कि ''उस परिवार अथवा देश उन्नति की सम्भावना नहीं जहाँ स्त्रियों का आदर न हो, जहाँ वे दुखी रहे, जहाँ वे शिक्षित न हो। इस कारण सर्वप्रथम इन्हें ऊपर उठाना हैं।''[9]

महामना जी का मत था कि भारतीय स्त्रियों की पवित्रता एवं सतीत्व बहुमूल्य निधि है। शिक्षा के द्धारा बहु–विवाह, सती–प्रथा, श्रद्धाहीनता, आत्मबल हीनता जैसी बुराईयों व कुरीतियों को दूर करके स्त्रियों को आत्मविश्वासी एवं दृढ़निश्चयी बनाया जा सकता है। मनु ने कहा था–''पुत्रियों का लालन–पालन और शिक्षा उतनी ही सावधानी से होनी चाहिए। जितनी पुत्रों की।''

वे स्त्रियों को इस प्रकार की शिक्षा देने के पक्ष में थे। जो धार्मिक होने के साथ–साथ भावात्मक हो तथा जिससे उनमें स्वाभिमान और श्रद्धा का भाव जागे। वे प्राचीन स्त्रियों अहिल्याबाई, झांसी की रानी, संघमित्रा आदि के आदर्शों को अपनाकर स्त्रियों में पवित्रता, निर्भयता और ईश्वर परायणता के गुणों को विकसित करना चाहते थे। इसके अलावा भी विज्ञान एवं अन्य विषयों की भी शिक्षा दी जानी चाहिए। जिससे उनके मानसिक बल में वृद्धि होकर भौतिक विकास हो सके।

महामना जी लड़कियों को उच्च शिक्षा देने के पक्ष में थे। स्त्रियों में सीता, सावित्री, अनुसुइया आदि जैसी भारतीय नारियों के पदचिन्हों का अनुसरण कराके स्वयं की और देश की उन्नति कराना चाहते थे। उन्होंने माना कि पढ़ी–लिखी स्त्रियों को शिक्षा का भार अपने ऊपर लेकर सभी जगह शिक्षा का प्रचार व प्रसार करना चाहिए। महामना जी स्त्रियों के लिये शिक्षा में प्राचीन इतिहास, पुराण गृह व्यवस्था, कला–कौशल, गृहजीवन के कर्तव्य और चरित्र–गठन के सिद्धान्तों की शिक्षा आदि के साथ ही सीना–पिरोना, गृहकार्य एवं शिशुपालन आदि को भी सम्मिलित कर सभी प्रकार से शिक्षित करना चाहते थे। महामना जी भारतीय नारियों को शिक्षित कराने के लिये निरन्तर प्रयासरत रहे।

सन्दर्भ

1. कु0 नमिता भारद्वाज–वैदिक वाड्मय में शिक्षा तथा आधुनिक भारत के सन्दर्भ में उसकी उपयोगिता 1986–87
2. चतुर्वेदी, सीता राम–महामना पं० मदनमोहन मालवीय, तारा प्रकाशन, वाराणसी 1936.
3. लाल, मुकुट बिहारी–थाट्स ऑफ एजूकेशनल एण्ड सम एलाइड प्राब्लम्स् (लेख– यूनिवर्सिटी ऑटोनामी एण्ड एजूकेशन रिफोर्म) जनवरी 1959.
4. राय, एम0–"पंडित मदन मोहन मालवीय के विचारों का अध्ययन", शोध प्रबन्ध, 1986
5. सिंह, प्रवीण कुमार–"भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्ताकें के योगदान का तुलनात्मक अध्ययन", शोध प्रबन्ध, 2007.
6. श्रीमती वीना शर्मा–"पं0 मदन मोहन मालवीय एवं महात्मा गाधी का शिक्षा दर्शनः एक विश्लेषाणात्मक अध्ययन", शोध प्रबन्ध, 2009
7. सिंह, नवनीत कुमार–"भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों का शिक्षा में योगदान और उसकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता", शोध प्रबन्ध, 2009.